हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

23 मार्च, 1977

खंड 1, अंक 1

अधिकृत विवरण

विशय सूची

बुधवार, 23 मार्च, 1977

	पृश्ठ संख्या
अध्यक्ष द्वारा घोशणाएं 1. श्रीमति लज्जा रानी का देहान्त 2. सभापतियों की तालिका 3. याचिका समिति	 (1)1 (1)1 (1)1
सचिव द्वारा घोशणा	(1)2
राज्यपाल का अभिभाशण	(1)2
कार्यमन्त्रणा समिति का प्रथम प्रतिवेदन	(1)14
नियम 30 के अधीन प्रस्ताव	(1)17
भाोक प्रस्ताव	(1)18

हरियाणा विधान सभा

बुधवार, 23 मार्च, 1977

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर 1, चण्डीगढ़, में 15:10 बजे हुई। अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की।

अध्यक्ष द्वारा घोशणाएं

1. श्रीमति लज्जा रानी का देहान्त

Mr. Speaker: I have to inform the house with deep sorrow that Smt. Lajja Rani, a Member of the Haryana Vidhan Sabha representing Bhadra Assembly constituency of Bhiwani district, died on the 1st March, 1977.

2. सभापतियों की तालिका

Mr. Speaker: Under Rule 13(1) of the Rules of Procedure Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly, I nominate the following Members to serve on the Panel of Chairman:-

1. Rao Nihal Singh

2. Rao Dalip Singh

3. Ch. Ishwar Singh

4. Ch. Manphul Singh

3. याचिका समिति

Mr. Speaker: Under Rule 286(1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly I nominate the following Members to serve on the Committee on Petitions:-

1. Smt. Lekhwati Jain (Deputy Speaker) Ex-Officio-Chairman

2. Rao Dalip Singh

3. Sh. Gulab Singh Jain.

4. Ch. Phool Chand (Rohat); and

5. Ch. Phool Chand (Mullana)

सचिव द्वारा घोशणा

Secretary: Sir, I beg to lay on the Table of the House a statement showing the Bills which were passed by the Haryana Legislative Assembly during its last session held in November, 1976, and have since been assented to by the Governor/President.

Statement

1. The Punjab Gram Panchayat (Haryana Third Amendment) Bill, 1976.
2. The Punjab Panchayat Samitis (Haryana Second Amendment) Bill, 1976.
3. The Haryana Cattle Fairs (Amendment) Bill, 1976.
4. The Haryana General Sales Tax (Third Amendment) Bill, 1976.
5. The Punjab Cooperative Societies (Haryana Third Amendment) Bill, 1976.
6. The Haryana Appropriation (No. 4) Bill, 1976.
7. The Haryana Ceiling on Land Holdings (Third Amendment) Bill, 1976.

Sir, I have to inform the House that the President has withheld his assent from the following two Bills, which were passed by the Haryana Legislative Assembly during its session held in July, 1975:-

1. The Punjab Security of Land Tenures (Haryana Amendment) Bill, 1975.
2. The Pepsu Tenancy and Agricultural Lands (Haryana Amendment) Bill, 1975.

राज्यपाल का अभिभाशण

(सदन की मेज पर रखी गई प्रति)

Mr. Speaker: In pursuance of Rule 18 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly, I have to report to the House that the Governor was pleased to address the Haryana Legislative Assembly on the 23rd March, 1977 at 2.00 p.m. under Article 176(1) of the Constitution.

A copy of the Address is laid on the Table of the House.

'मित्रो'

मुझे विधान सभा के वर्श के प्रथम सत्र में आप सब लोगों का स्वागत करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। मैं चाहता हूं कि आप लोग इस विम र्ा में सफल हों। मुझे वि वास है कि आप लोगों के प्रयास से हरियाणा राज्य उसी गति से विकास पथ पर अग्रसर होता रहेगा जिससे गत कुछ वशोंर् में इतनी प्रगति सम्भव हो सकी है। हमारे इस छोटे से राज्य को दे ाभर में विकास–सोपान पर सर्वप्रथम रहने का गौरव प्राप्त है और मुझे वि वास है कि हम सभी इस स्थिति को बनाए रखने का सतत प्रयास करेंगे। यद्यपि अनेक चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर लिया गया है तथापि अभी बहुत से कार्य हैं, जो किए जाने भोश है। मेरा आप लोगों से और राज्य के अन्य सभी

लोगों से आग्रह हैं कि हम सभी लोग प्रगति के नए पथ प्र ास्त करने और गरीबी दूर करने के काम में जी–जान से जुट जाएं।

सरकार के कार्यक्रमों और नीतियों और प्राप्त किए गए लक्ष्यों के विशय में कुछ कहने से पहले मेरा भाोकातुर मन प्रिय राश्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अली अहम को याद किए बिना नहीं रह सकता। उनके निधन से राश्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई हैं। वे सरल हदय और निस्वार्थी व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना समस्त जीवन राश्ट्र की सेवा के लिए समार्पित कर दिया था। वे धर्मनिरपेक्ष आद र्वाद की प्रतिमूर्ति थे और उन्होंने अपने दे ावासियों के सम्मुख प्रेम और दया का एक देदीप्यमान उदाहरण प्रस्तुत किया, जिससे राश्ट्र की भावनात्मक एकता को बल मिला। मेरे मन में अपने आद र्भूत पूर्ववर्ती स्वर्गीय श्री बी.एन. चक्रवर्ती की स्मृति भी कौंध जाती है, जिन्हें एक वर्श पूर्व राज्य ने खो दिया था। नौ वर्श की लम्बी अवधि में, राज्य के प्रत्येक व्यक्ति की जुबान पर उनका नाम था और वे राज्य के विकास से सम्बद्ध सभी व्यक्तियों के लिए निरन्तर प्रेरणास्त्रोत बने रहे। उनकी गम्भीर प्रतिभा, दूरद र्ी नीति ओर कु ाल राजनीति से राज्य विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर होता रहा। हरियाणा राज्य उनको कभी नहीं भूल सकता और न ही यह स्वर्गीय श्री चक्रवर्ती जी द्वारा किए गए उपकारों से उऋण हो सकता है। भाोक की इस घड़ी में हमे इस विचार स सान्त्वना मिलती है कि दोनों दिवंगत आत्माओं से हूं उनके आद र्ा पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

सर्वप्रथम मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि वर्श 1976–77 के दौरान राज्य की प्रगति और सुदृढ़ हुई तथा स्थाई बनाई गई। जीवन के हर क्षेत्र में अनु ाासन लगातार देखने में आया है। राज्य में किसी भी प्रकार की हड़तालें और तालाबन्दियां नहीं की गयीं। कृशि और औद्योगिक उत्पादन में निरन्तर सन्तोशजनक वृद्धि हुई। जमाखोरी और समाज विरोधी तत्वों के विरूद्ध अपेक्षित कार्यवाही जारी रखी गई और कीमतें सामान्य तौर पर नियन्त्रण में रही। 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के निश्पादन की गति और तेज कर दी गई और समाज के कमजोर वर्गों की द ाा सुधारने की परियोजनाएं प्रभावी ढंग से जारी रहीं।

मुझे यह बताते हुए हर्श हो रहा है कि सरकार को महत्वपूर्ण 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम तैयार करने और उसके निश्पादन का गौरव प्राप्त हैं गत वर्श दिसम्बर के अन्त तक अनुसूचित जातियों और अधिसूचित पिछड़े वर्गों के 214753 व्यक्तियों में से, जोकि मकान के लिए जगह प्राप्त करने के पात्र थे, 213377 व्यक्तियों को जगह अलाट कर दी गई। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मकान बनाने के लिए दी जाने वाली जगहों पर मकान बनाने के लिए अपेक्षित अन्य प्रबन्ध किए बगैर जगहों का दिया जाना आंि ाक उपलब्धि होगी, सरकार ने भवन निर्माण के लिए अलाटियों को उपयुक्त ऋण देने की व्यवस्था की है। परिणामस्वरूप राश्ट्रीयकृत बैंकों ने ऐसे निर्माण के लिए धन देना आरम्भ कर दिया है। देहाती कर्जदारी को समाप्त करने के

कार्यक्रम और इसके स्थन पर आव यक सांस्थानिक वित व्यवसाा करने की और भी उचित ध्यान दिया गया। हरियाणा कृशि कर्जदारी, राहत अधिनियम द्वारा 2400 रूपए वार्शिक पारिवारिक आय वाले कृशि मजदूरों, देहाती कारीगरों और सीमान्त किसानों की ऋण देयता बिल्कुल ही समाप्त हो गई और ऐसे व्यक्तियों की ऋण देयता सीमित हो गई जिनकी वार्शिक आय उक्त आंकडों से अधिक है अथवा जो छोटे किसान हैं। दूसरी ओर किसानों, कारीगरों और अन्य व्यक्तियों की उपयुक्त आव यकताओं को पूरा करने के लिए पुनर्गठित सहकारी समितियों, प्रादे ाक देहाती बैकों और कृशक सेवा समितियों के माध्यम से नई उधार सुविधाएं जुटायी गयीं। वर्श 1976 के अन्त तक प्रादे ाक देहाती बैंकों और उनकी 33 भााखाओं ने लगभग 69 लाख रूपए के ऋण दिए थे। इसी प्रकार गत वर्श दिसम्बर, के अन्त तक छः कृशक सेव समितियों ने, जिनके अन्तर्गत लगभग 98000 जनसंख्या वाले 90 गांव आते हैं, और जिनके 8199 सदस्य हैं, 55.27 लाख रूपए के अल्पावधि और मध्यमावधि ऋण दिए थे। वर्तमान सहकारी समितियों को पुनगर्ठित किया गया और जुलाई से दिसम्बर तक के छः महीनों में इन पुनर्गठित सहकारी समितियों ने छोटे और सीमान्त किसानों तथा भूमिहीन कामगारों को 825.55 लाख रूपए के अल्पावधि ऋण प्रदान किए थे। दिसम्बर, 1976तक देहाती कारीगरों को अलग से 29.62 लाख रूपए दिए जा चुके थे।

आव यक वस्तुओं के मूल्यों को नियंत्रित करना 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग है और इसीलिये इस पर उचित बल दिया गया है। सौभग्यव ा राश्ट्रीय स्तर पर किये गये उपायों के परिणामस्वरूप चालू वर्श के दौरान मूल्य सूचकांक सुनियंत्रित रहा। किन्तु सतत सतर्कता तथा सुगठित विरण प्रणाली द्वारा ही ऐसा करना समीाव हो सका है। अब आव यक वस्तुओं के वितरण के लिए राज्य के सभी देहाती और भाहरी क्षेत्रों में उचित मूल्य की दुकानों का जाल बिछा हुआ है। इस समय परचून की 2538 दुकानें है जिन पर उचित मूल्य पर कपड़ा उपलब्ध है जबकि 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के आरम्भ में जून 1975 में ऐसी 341 दुकानें थी। सभी स्कूलों औश्र कालेजों के छात्रावासों को उपभोक्ता सहकारी स्टोरों से समबद्ध कर दिया गया है जिसके परिणामस्वरूप छात्र नियंत्रित मूल्यों पर आव यक वस्तुएं प्राप्त कर सकते है।

भूमि सुधारों के संबंध में राज सरकार ने भूमि की अधिकतम सीमा के कानून में अपेक्षित सं ाोधन किये और बड़े–बड़े भू–स्वामियों से नए घोशणा पत्र आमंत्रित किये। फालतू क्षेत्र सुनि चत करने के विचार से इन घोशणा पत्रों की छानबीन का कार्य चल रहा है। इस दौरान मई 1976 में फालतू भूमि को उपयोग में लाने की स्कीम तैयार की गई और जून से दिसम्बर 1976 की अवधि के दौरन पुराने अधिकतम सीमा कानून के अधीन उपलब्ध 12502 हैक्टेयर फालतू क्षेत्र को 10821 व्यक्तियों में

(जिनमें से 4698 हरिजन हैं बांट दिया गया है। इस मामले में उच्च न्यायालय द्वारा विचाराधीन कुछ प्रदे ा याचिकाओं पर निर्णय दिए जाने के उपरांत कार्य की गति तेज हो जाने की संभावना है।

हथकरघे के विकास की और भी उचित ध्यान दिया जाता रहा है और इस वर्श जनवरी तक 1838 बुनकरों को 35.71 लाख रूपये की वितीय सुविधाएं जुटाई गई। इस उद्योग के लिय एक हथकरघा निगम स्थापित किया गया है। निगत तथा राज्य सरकार ने भिवानी और पानीपत में बनकर कालोनियां बनाने की महत्वपूर्ण स्कीमें तैयार की है। पानीपत परियोजना का पर्याप्त कार्य हो चुका है और भिवानी परियोजना का कार्य भीघ्र ही आरम्भ होने वाला है। पानीपत में निर्यात उत्पान परियोजना स्थापित करने तथा उचित दरों पर आव यक भौतिक तथा वितीय सुविधाएं उपलब्ध कराने की स्कीमें भी उल्लेखनीय हैं।

कृशि और इसके आधारभूत ढांचे के विकास की दि ाा में सरकार अधिकाधिक ध्यान देती रही है। 1975–76 के लिए 46. 60 लाख टन के मुकाबले में वास्तविक खाद्य उत्पादन 50.38 लाख टन तक पहुंच गया, जिसके परिणामस्वरूप यह उत्पादन पूर्ववर्ती वर्श से 50 प्रति ात अधिक था। राज्य के गठन के समय से लेकर चावल और गेहूं के उत्पादन ने सभी रिकार्ड मात कर दिये। परिणमस्वरूप केन्द्रीय पूल के लिये 4.54 लाख टन चावल और 9. 07 लाख टन गेहूं अधिप्राप्त करना भी सम्भव हो सका था। वर्श 1976–77 के लिये खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य 47 लाख टन

निर्धारित किया गया था। इसमें से 14.40 लाख टन खरीफ के लिये और 32.60 लाख टन आगमी रबी के लिये रिनर्धारित थे। आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि भारी बाढ और प्राकृतिक हानि के बावजूद खरीफ की फसल लक्ष्य से भी अधिकतर रही है और वास्तविक उत्पादन 14.77 लाख टन होने का अनुमान है जिसमें से 5.01 लाख टन चावल केन्द्रीय पूल में पहले ही दिया जा चुका है। रबी का उत्पादन लक्ष्य प्राप्त करने का भी प्रयास किया जा रहा है और प्रमाणीकृत बीजों के वितरण तथा अन्य आव यक सामग्री का प्रबन्ध करने के लिए सरकार की विस्तार एजेंसी सक्रिय रही है। गेहूं के 27608 क्विंटल और चने के 7240 क्विंटल अधिक उपज वाली किस्मों क प्रमाणीकृत बीज क्रम ाः 150 रूपये तथा 135 रूपये प्रति क्विंटल के हिसाब से रियायती दरों पर वितरित दरों पर वितरित किये गये। खाद की खपत भी उत्साहजनक रूप से बढ़ी है। उदाहरण के रूप में, खरीफ 1976 के दौरान खाद की खपत 35000 टन के लक्ष्य के मुकाबलें में 40339 टन तक पहुंच गई जबकि पूर्ववर्ती खरीफ वर्श में वास्तविक खपत 25000 टन से थोड़ी कम थी। खाद की खपत पर उपदान की पर्याप्त रा ि। उपलब्ध करवाई जाती रही और इस उपदान पर राज्य द्वारा किया गया वर्श 1976–76 का खर्च 56.09 लाख रूपये से बढ़ कर चालू वर्श में 82.69 लाख रूपये हो गया।

यह उल्लेखनीय है कि बाढ़ से पिछली खरीफ फसल को भारी हानि होने के बाद सरकार ने रबी की बुवाई के लिए

अधिकतम सुविधा प्रदान करने के लिए बाढ़ तथा वर्शा के जमा हुए जल को निकालने का आदे ा देने का साहसपूर्ण कदम उठाया है। इस प्रयोजन के लिए युद्ध–स्तर पर पम्पों द्वारा पानी निकालने का कार्य आरम्भ किया गया और आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अधिकां ा बाढ़ग्रस्त क्षेत्र मैं से जमा हुआ पानी निकाल कर उसे रबी की बुवाई के लिये उपयुक्त बना दिया गया था। भोश जो क्षेत्र रबी फसल की बुवाई के लिए उपयुक्त बना जा सका, उसमें सरकार ने खरीफ तथा रबी दोनौं फसलों के लिए भूमि–कर, माफ करने का निर्णय लिया। यह माफी क्षत्रीय अधिकारियों द्वारा आदिश्ट भूमि कर स्थगति करने के अतिरिक्त थी।

कृशि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परियोजना कपास परियोजना है जो कि हिसार और सिरसा जिलों के हिस्सों में वि व बैंक की सहायता से कार्यान्वित की जा रही है। परियोजना के प्रथम चरण मे, सिरसा और रनिया विकास खंडों में कार्य भुरू किया गया है और आगामी तीन वर्शों के दौरान हर वर्श एक–एक खंड जोड़ा जायेगा। इस परियोजना के अन्तर्गत निर्धारित 40000 हैक्टेयर के लक्ष्य के मुकाबले में, प्रथम चरण में 43000 हैक्टेयर लाये जा चुके हैं।

विकास के इस क्षेत्र के अन्तर्गत जारी रहने वाल अन्य कार्यक्रम तीव्र गति से चलते रहे और इस प्रकार उत्पादन के अधिकाधिक लक्ष्य प्राप्त किये गए। यहां हरियाणा बीज विकास निगम का वि ोश उल्लेख करना एंगत होगा जिसने वर्श

1975–76 में 24612 क्विंटल धान, 68000 क्विंटल गेंहूं और अन्य फसलों के लिए 4824 क्विंटल बीज तैयार किये। तैयार किए गये बीजों का कुछ हिस्सा राज्य में विरित किया गया और भोश भाग अन्य बीज तैयार कर सकेगा। आ ाा है कि निगम राज्य में उपयोग में लाये जाने के लिए 6000 क्विंटल धान के बीज और 50000 क्विंटल गेहूं के बीज उपलब्ध करा सकेगा।

हरियाणा राज्य भूमि विकास तथा सुधार निगम आ ाा करता है कि वह वर्श 1976–77 के दौरान 4,600 एकड़ भूमि का सुधार और 4,933 एकड़ भूमि को समतल करवाने में सफल हो सकेगा। भूमि के अधिकतम सुधार के लिए प्रोत्साहन देने हेतू जिप्सम की खरीद के लिए छोटे किसानो को 50 प्रति ात तक अन्य किसानो को 25 प्रति ात की रियासत दी जा रही है। कृशि पुनर्वित तथा विकास निगम ने करनाल, कुरूक्षेत्र, सोनीपत ओर जींद कि जिलो में 12000 हैक्टेयर भूमि के सुधार के लिए 555 लाख रूपये की स्कीम मंजूर ही है।

कृशि के लिए सिचाई एक अत्यधिक महत्वपूर्ण साधन है–वि ोशत पुरातन काल से भाुश्क प्रदे ा में। इसलिये मुझे यह कहते हुए हर्श हो रहा है कि हमारी सरकार, जहां भी और जैसे भी हो, उपलब्ध जल को खोजने और नहरो, जल मांर्गो के माध्यम से उसका सदुपयोग करने के लिए भरसक प्रत्यन करती रही है। ब्यास परियोजना अब लगभग मुकम्मिल होती हुई नजर आ रही है और भारत सरकार के निर्णयानुसार हरियाणा को राबी–ब्यास के

72 लाख एकड़ फुट फालतू जल में से 35 लाख एकड़ फुट जल मिलेगा। जल का वास्तविक उपयोग सतलुज यमुना योजक नहर के मुकम्मिल आने का अनुमान है। इस परियोजना पर 66.45 करोड़ रूपये की लागत आने का अनुमान है। इस परियोजना पर कार्य भाुरू किया जा चुका है और मुझे आ ाा है कि पंजाब से हमे पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा ताकि इस महत्वपूर्ण परियोजना को भाीध्र ही मुकम्मिल किया जा सके ।

पंडित जवाहर लाल नेहरू उठान सिंचाई स्कीम एक और महत्वपूर्ण परियोजना है जिस पर कार्य जारी रहा और इस परियोजना पर चालू वर्श के दौरान 16 करोड़ रूपये की रा ि। खर्च किये जाने की आ ाा है। इस परियोजना के चालू पंचवर्शीय योजना की अवधि के अन्दर ही नियत समय पर मकम्मिल हो जाने की आ ाा और इससे महेन्द्रगढ़, भिवानी, रोहतक जिलो के पिछड़ क्षेत्रो में ढाई लाख हैक्टेयर भूमि को लाभ पहुचेगा। बीस सुत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्श 1975–76 से वर्श 1978–79 तक की अवधि के लिए 3.22 लाख हैक्टेयर भूमि मे अतिरिक्त सिचाई सुविध जुटाने का लक्ष्य था और पहले दो वर्शो में 1.09 लाख हैक्टेयर भूमि में सिचाई सुविधा जुटाये जाने की आ ाा थी। यह बड़े सन्तोश की बात है कि पहले दो वर्शो के लक्ष्य प्राप्त कर लिये गये है।

सतही जल के उपयोग के इलावा,भूमिगत जल के अधिकतम उपयोग का भी पर्याप्त महत्व है। कृशि विभाग और

राज्य लधु सिचाई और ट्यूबैल निगम दोनो ही इस संसाधन के विकास पर कार्य कर रहे है। बीस सूत्री कार्यकम को लागू करने के डेढ़ वर्श से थोड़े अधिक समय में जुलाई, 1975 के प्रारम्भ और इस वर्श जनवरी के अन्त के बीच की अवधि के दौरान 206 गहरे नलकूपो, 15569 कम गहरे नलकूपो और पम्प सैटो और 214 छिड़काव सैटो वृद्वि हुई है। 30 जून, 1975 को राज्य में 2032 गहरे नलकूप थे जो कि इस वर्श जनवरी में बढ़ कर 2238 हो गये । इसी तरह इस अवधि में कम गहरे नलकूपो और पम्प सैटो की संख्या 192337 से बढ़ कर 207906 और छिड़काव सैटो की संख्या 138 से बढकर 352 हो गयी है।

लधु सिचाई और नलकप निगम भी जल मार्गो को पक्का करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और इस तरह इस महत्वपूर्ण प्राकृतिक साधन की हाने वाली पिरहार्य हानि को रोक रहा हैं। मुझे प्रसन्नता है कि उनके प्रयत्नों से जल व्यवस्था अच्छी हो रही है जिसके फलस्वरूप बीत रहे वर्श में लगभग 1,250 किलोमीटर लम्बाई वाले 483 जल–मार्गो को पक्का किया जायेगा।

सिंचाई के इलावा ,कृशि , उद्योग तथा वाणिज्य के लिए बिजली दूसरा महत्वपूर्ण साधन हैं। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि बिजली क्षेत्र की परियोजनाएं तीव्र गति से प्रगति करती रही। फरीदाबाद में 60 मैगावाट क्षमता वाला दूसरा यूनिट पिछले वर्श मार्च में ग्रिड के साथ कनयत समय से एक महीना पहने ही चालू किया गया। फरीदाबाद में 60 मैगावाट के तीसरे यूनिट के

लिये मंजूरी प्राप्त करने के फलस्वरूप कार्य हाथ में लिया गया और आ ाा की जाती हैं कि सितंम्बर ,1979 तक यह यूनिट चालू हो जाएगा। पानीपत थरमल प्रोजैक्ट के प्रथम चरण में 110 मैगावाट की क्षमता वाले दो यूनिटों पर कार्य नियत समय के अनुसार चल रहा हैं और 110 मैगावाट के प्रथम यूनिट के आगामी जून में चालू हो जाने की और इसके कुछ महीनों के बाद मार्च ,1979 में दूसरा यूनिअ चालू किये जाने की सम्भावना हैं। पन्द्रह पन्द्रह मैगावाट के चार बिजलीघरों वाली पि चमी यमुना नहर परियोजना के सर्वेक्षण और अन्वेशण का कार्य हाथ में लिया जा चुका है और विस्तृत परियोंजना रिर्पोट भीघ्र ही उपलब्ध हो जायेगी। ब्यास परियोजना के उपलब्ध होने वाली बिजली की अधिक मात्रा को दूसरे स्थानों तक ले जाने के लिऐ परिशण और वितरण प्रणाली को चालू का कार्य पूरे जोरों पर है और ऐसा अनुमान है कि चालू वर्श में इन कार्यो पर 11 करोड़ रूपये खर्च किये जा चूके होगैं। चालू वर्श मे कम से कम 12,000 अतिरिक्त नलकूपों को बिजली दिये जाने की आ ाा हैं। वर्श 1977–78 और 1978–79 में भी इतने नलकूपों को बिजली दी जायेगा।

हिमाचल प्रदे ा सरकार के साथ नाथपा–झकड़ी पन–बिजली परियोजना में सहभागी,बनना, बिजली विकास के सम्बंध में हरियाणा सरकार का एक अति–महत्वपूर्ण निर्णय है।यह परियोजना नदी प्रवाह आधारित स्कीम हैं।और बिजली की उपलम्यता मौसम और जलवायु के अनुसार घटती बढ़ती रहेगी,

तथापि ऐसी आ ाा हैं कि औसत वर्श में इससे 605 मैगावाट बिजली पैदा होगी जोकि 1,020 मैगावाट के चरमोत्पादन तक पहुंच सकती हैं। इस परियोजना की लागत 271 करोड़ रूपये होगी। हरियाणा सरकार इस लागत का 80 प्रति ात भाग देने के लिये सहमत हो गई है। हरियाणा सरकार पैदा की जाने वाली बिजली को परियोजना स्थल से हरियाणा मे ले जाने के लिये परिशण स्कीम पर होने वाले खर्च को भी सहन करने के लिए सहमत हो गई है।इस स्कीम पर 100 करोड़ रूपये और खर्च होने का अनुमान हैं।परियोजना से पैदा की जाने वाली बिजली के 80 प्रति ात भाग पर हरियाणा सरकार का भाग होगा। जो बिजली हिमाचल प्रदे ा के हिस्से में आएगी और उस राज्य की अपेक्षाओं को पूरा करने के बाद फ ालतू रहेगी, उसे पारस्परिक सहमति के निर्धारित मूल्य पर खरीदने का अधिकार पहले हरियाणा राज्य का होगा। इस परियोजना के निश्पादन की जिम्मेदारी हरियाणा सरकार की होगी।

सहकारी क्षेत्र को कृशि, प ाुपालन और सामान्यतः देहाती इलाको में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती हैं। इसलिए प्राथमिक उधार ढ़ाचे को पुनव्यवस्थित करने और 6,189 प्राथमिक कृशि उधार तथा सेवा समितियों के मिलाने को श्रेय हमारी सरकार को दिया जाना चाहिए। अब इन समितियों ने 2,168 बड़े और वितिय रूप में सक्षम यूनिटो का रूप धारण कर लिया हैं। इन्हे अब मिनी बैकों के नाम से पुकारा जाता हैं। अब इन यूनिटो के

नियमित कार्यालय हैं और अब इनमें पूर्णकालिक प्र ाक्षित ऐसे मैनेजर काम करते हैं जो केन्द्रीय सहकारी बैकों के सामान्य संवर्ग से सम्बध रखते हैं।दे ा में सब से पहले हमारी सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर लोगों और भूमिहीनों को उपभोग ऋण देने के लिए भी नये प्रयास किए हैं।

राज्य में सहकारी क्षेत्र मध्यम और बड़े पैमाने की प्रौद्योगिक गतिविधियौं में भी भाग लेता रहा हैं। सोनीपत और करनाल में दो नई चीनी मिलों मे जनवरी, 1977 से उत्पादन प्रारम्भ हो गया हैं। भााहबाद औंर पलवल में चीनी के दे अतिरिक्त कारखाने लगाए जाने की स्कीम तैयार हो रही हैं और जिला जीन्द में एक और कारखाना लगाए जाने पर सोच–विचार हो रहा हैं। हाँसी मे कताई कारखाना स्थापित करने और चलाने के लिए एक सहकारी समिति रजिस्टर की गई हैं। इस कारखाने में उत्पादन भीघ्र ही आरम्भ हो जाएग। ि ाखर हथकरघा बुनकर सहकारी समिति, पानीपत ने राज्य के विभिन्न स्थानों पर 18 प्र ि ाक्षण एवं उत्पादन केन्द्र स्थापित किए है। ि ाखर समिति ने कच्चे माल की सप्लाई का काम और सदस्य समितियों के तैयार माल के विपणन का काम भी किया। प्रौधोगिक सहकारी संद्य राज्य में चमड़े का काम करने वाले कामगारों के लिए रोजगार प्रोत्साहन कार्यक्रम लागू करता रहा और इस प्रयोजन के लिए विभिन्न स्थानों पर 21 चमड़ा प्र ि ाशण एवं उत्पादन केन्द्र स्थापित किए गए। निर्माण कार्य का ठैका लेने और निश्पादित करने में 557 श्रम तथा निर्माण

समितियां प्राइवेट ठेकेदारों से प्रतियोगिता कर रही हैं। राज्य में 1700 विक्रय केन्द्रो सहित, जिला स्थानों और महत्वपूर्ण नगरों में स्थित 16 थोक सहकारी उपभोक्ता स्टोर यथोचित मूल्य पर अच्छे स्तर पर माल सप्लाई करके मूल्य स्थिर रखने में जुटे रहे। 1975–76 में इन स्टोरों ने 10.69 करोड़ रूपये का माल बेचा।

हरियाणा कृशि उद्योग निगम, हरियाणा कृशि विपणन बोर्ड, और हरियाणा वेयर हाउसिंग निगम भी राज्य में कृशि के आधारभूत ढ़ाचे में सहायता देने में उपयोगी रहे हैं। हरियाणा कृशि उद्योग निगम ट्रैक्टरों को जोड़ने और उनके वितरण का काम करता रहा हैं।यह निगम उन किसान सेवा केद्रों की स्थापना का काम भी करता रहा हैं जो अन्य कामों के साथ–साथ ट्रैक्टर, कम्बाइन, बुलड़ोजर जैसे कृशि सम्बधि उपस्कर किसानों को व्यक्तिगत रूप में किराए पर देते रहे हैं। यह निगम भंड़ार करने के लिए धान्य कोश्ठ और रासायनिक खाद उपलब्ध करवाता रहा है। हरियाणा कृशि विपणन बोर्ड कृशि उपज के विकय,क्रय, विधान और भंडार को नियमित करता रहा है। हरियाणा राज्य वेयर हाउसिंग निगम ने,जिसे 1967 में 7000 मीटरी टन भण्डार–क्षमता प्राप्त की ली थी और ऐसी आ ाा है कि भीध्र ही इस भण्डार–क्षमता 178,800 मीटरी टन हो जायेगी ।

प ाुपालन और डेयरी उघोग विशयों में सदा हमारी रूचि रही है। इसलिये इन क्षेत्रो में हमारी सरकार की दिलचस्पी प्र ांसनीय है। प ाुपालन विभाग के कार्यक्रमो में उपयुक्त संकर

प्रजनन द्वारा दे ाी या विदे ाी स्ट्रेन से नसल सुधार पर जोर रहा है। करनाल, गुड़गांव, कुरूक्षेत्र,जीन्द,भिवानी और अम्बाला जिलो में पहले से ही विधमान छ सधन प ा विकास परियोजनाओ के अलावा जिला सिरसा के दूध वाले क्षेत्र की आव यकता को पूरा करने के लिए सातवी परियोजना तैयार की जा रही है। संकर प्रजनन कार्यक्रम की सहायता के लिए क्रम ाः आस्ट्रेलियाई और डेनमार्क सरकारो के सहयोग से भारत–आस्ट्रेलियाई प ा प्रजनन परियोजना,हिसार और प्र ाीतित वीर्य बैंक,गुड़गांव की स्थापना की गई है।

हरियाणा डेरी विकास निगम विभिन्न दुग्ध संयंत्रो में दुग्ध विधायन में सक्रिय रहा है। निगम के कार्यक्रमो से दूध उत्पादको को उचित मूल्य पर दूघ की बिक्री के लिए बिक्री केन्द्रो की व्यवस्था कर के लाभ पहुंचाया गया है और दूध से तैयार पदार्थ उपलब्ध करवा कर लाभ पहुचाया जाता गया। निगम द्वारा अभी हाल में रोहतक में दुग्ध संयंत्र मुकम्मिल किया गया है, यह दुग्ध संयत्र अब तक राज्य का सबसे बड़ा दुग्ध संयत्र है जिसकी प्रतिदिन क्षमता एक लाख लिटर दूध का विधायन करने की है। फरीदाबाद में दुग्ध संयत्र की भाीध्रता से निर्माण किया जा रहा है।

वातावरण के सुधार के लिए वनरोपण के महत्व को समझते हुए सरकार का वन विभाग हमार सम्पदा की सुरक्षा और विस्तार के लिए पूरे जो ा से प्रत्यन कर रहा है। वर्श 1976–77 के दौरान आर्थिक रूप से बहुमूल्य पोधो की किस्मो का आरोपण

किये जानक की सम्भावना है और राज्य की योजना के अधीन 69 लाख रूपये की लागत से 1.63 लाख पोधे लगाये जाएंगे। चालू वर्श के दौरान भारत सरकार द्वारा चलाई गई स्कीमो के अन्तर्गत 1642 अतिरिक्ति हैक्टेयर मे पोधारोपण किये जाने की आ ाा है। नये पोधे लगाने के अतिरिक्त विभाग द्वारा निश्पादित इमारती लकड़ी के कार्यो के माध्यम से वर्तमान वन सम्पदा से आर्थिक लाभ प्राप्त करने की और उचित ध्यान दिया जा रहा है। यह प्रयत्न राज्य के राजस्व का एक महत्वपूर्ण अंग बनता जा रहा है। आ ाा है वर्श 1976–77 के दौरान वन राजस्व 103.00 लाख रूपये तक पहुच जायेगा।

परम्परा से हरियाणा एक कृशि–प्रधान राज्य रहा है। तथापि हरियाणा के गठन के प चात् जिस गति से कृशि का विकास हुआ है लगभग उसी गति से उधोगो का विकास भी हो रहा है और सरकार की प्रगति ाील नीतियो से प्रोत्साहन प्राप्त करके विभिन्न प्रकार के उघोग धन्धे लगाये गये । वर्श के पहले 8 महीनो में छोटे पैमानो के 733 यूनिटो को नियमित रूप से पंजीकृत किया गया। गत वर्श के दौरान बड़े तथा मघ्यम पैमाने के क्षेत्रो में ओधोगिक यूनिट लगाने के लिए भारत सरकार से 28 आ ाय –पत्र और 36 ओघोगिक लाईसैस प्राप्त किये गये । इन परियोजनाओ पर लगभग 65.50 करोड़ रूपया लगेगा और इनसे लगभग 15000 व्यक्तियो को रोजगार मिल सकेगा। ने ानल फर्टीलाइजर्ज लिमिटेड, जो कि भारत सरकार का एक प्रतिश्ठान है,

पानीपत में एक रासायनिक खाद का कारखाना लगा रहा है । सयुक्त क्षेत्र के अर्न्तगत धारूहेड़ा में एक सिंथेटिक डेटरजेंट संयंत्र स्थापित किया जा रहा है । जीन्द में सरकार की और से हरियाणा चर्म ाला पहले ही चालू की जा चुकी है। बहुत सी अन्य प्राइवेट खेत्र परियोजना में से दो महत्वपूर्ण परियोजनाओ का उल्लेख किया जा सकता है–जिनमें से धारूहुड़ा मे कागज का कारखाना है और दूसरा गुड़गांव मे कलाई धड़ियो का कारखाना है, जिन्हे अनिवासी भारतीयो द्वारा स्थापित किया जा रहा है और दोनो कारखानो पर लगभग 20 करोड़ रूपये खर्च होगा और जिनमें 3000 व्यक्तियो को रोजगार प्राप्त होगा। वर्श 1975–76 के दौरान राज्य से अब तक अधिकतम 45 करोड़ रूपये का निर्यात किया गया जबकि पूर्व वर्श में यह निर्यात 30.80 करोड़ का था। हाल की सबसे अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि बहादुरगढ में एक नये ओघोगिक काम्पलेक्स का स्थापित किया जाना है। इस काम्पलैक्स को विकसित करने के लिए प्रथम चरण मे 2600 ओघोगिक प्लाट तैयार किय जायेगे जोकि अगले मास प्राइवेट उद्यमियो को सौप दिये जाने के लिए तैयार जो जायेगे जो कि अगले मास प्राइवेट उद्मियो को सौप दिये जाने के लिए तैयार हो जायेंगे और इनका विकास कार्य इस वर्श गर्मियो तक मुकम्मिल हो जायेगा।

श्रम तथा ओघोगिक प्र ाक्षण विभाग, राज्य में उघोगो के विकास के लिए भारी सहयोग प्रदान कर रहा है। यह सौभागय की बात है कि औधोगिक संबंध अच्छे और मैत्रीपूर्ण रहे है और

हड़ताले तथा तालाबंदियां बहुत कम हुई। चालू वर्श के दौरान कामगारो के अनेक वर्गो की मजदूरी की न्यूनतम दरो में सं ाोधन किये गए। ओधोगिक प्र ि ाक्षण विभाग युवको को प्र ि ाक्षण प्रदान करने और ि ाक्षूता अभियान को कियान्वित करने मे सकिय रहा है विभिन्न ओघोगिक प्र ि ाक्षण संस्थानो में 7648 उम्मीदवारो के लिए रखी गई सीटो के लिए अगस्त, 1976 मे 43254 उम्मीदवारो ने प्रार्थना पत्र दिये। ि ाक्षूओ के संस्थापन के सम्बन्ध में 3000 से अधिक ि ाक्षुओ को संस्थापित किया गया और नवम्बर 1976 के अन्त तक विभिन्न संस्थानो में 4150 भिक्षु प्र ि ाक्षण प्राप्त कर रहे थे ।

परिवहन,आर्थिक विकास और समाज में संचार साधनो का महत्वपूर्ण अंग है। निरंतर बढती हुई यात्री संख्या को सस्ते से सस्ते किराये पर परिवहन की तुरन्त तथा पर्याप्त सुविधाएं जुटाने में हरियाणा राज्य परिवहन को पहले की भान्ति अकेले ही सारा कार्य करना पड़ा। विभाग प्रतिदिन लगभग 511000 यात्रियो की जरूरतों को पूरा कर रहा है ओर विभाग की बसे प्रतिदिन लगभग 440000 किलोमीटर फासला तय करती है । वित वर्श 1975–76 के अंत तक बसो की संख्या 1680 थी और आ ाा है कि चालू वर्श के अंत तक यह संख्या बढ़कर 2100 हो जायेगी।

संचार के लिए सड़के एक अन्य आव यक आधारभूत ढांचा है। हरियाणा का सौभाग्य है कि राज्य मे जिन विकास कार्यो पर सबसे पहले ध्यान दिया गया उनमे से एक था–सड़को का

जाल बिछाना। परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में अपेक्षित विकास की दर अब अपेक्षतया कम हो गई। फिर भी मुझे यह कहते हुए हर्श हो रहा है कि चालू वर्श में 550 किलोमीटर पक्की सड़के बनाकर 250 अतिरिक्त गांवो को जोड़ दिया जा रहा है जायेगा। विभाग द्वारा ऐसी सड़को को पक्का बनाने के कार्य पर जोर दिया जा रहा है जहां पर यह कार्य पहले नही किया गया था । गत वर्श भारी बाढ आ जाने के कारण यातायात को सुचारू रूप से चलाने के लिए विभागीय साधनो पर बहुत बोझा पड़ा और इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना कर सकने के लिए सरकार प्र ांसा की पात्र है।

स्वस्थ भारीरो में स्वस्थ मनों वाले लोगो के लिए सभी आर्थिक लाभ सार्थक होते है। इस प्रकार ि ाक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्रो में सरकार की गतिविधिया बहुत ही महत्वपूर्ण है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि रोहतक वि वविघालय ने कार्य करना आरम्भ कर दिया है और वि वविघालय के इर्द गिर्द 16 किलोमीटर तक 12 कालेजो को इससे सम्बन्ध कर दिया गया हैं इस वि वविघालय का गठन एकात्मक स्वरूप की अवधारणा पर किया गया है और इसे जैव विज्ञान के भाोध एवं ि ाक्षण के लिए बनाया गया है। स्कूल ि ाक्षा स्तर पर सरकार ने 10+2 ि ाक्षा प्रणाली को कमिक रूप से आरम्भ करने का निर्णय लिया है तथा तदनुसार चालू वर्श से सड़को के लिए गणित तथा विज्ञान को 9वी कक्षा से अनिर्वाय बना दिया गया है। प्राइमरी श्रेणियो में बच्चो की

भरती के लिए अभिमान आरम्भ किया गया जिसके परिणाम स्वरूप 6–11 आयु वर्ग के लगभग 84000 अतिरिक्त बच्चो को समाप्त होने वाले वर्श में नामांकित किया गया। इस प्रकार इस आयु वर्ग के नामांकन की समूची प्र ि ातता 75 प्रति ात तक बढ जाएगी। सभी वर्गो के अध्यापको की सेवा काल में अध्यापन–प्र ि ाक्षण के माध्यम से स्कूल ि ाक्षा स्तर में सुधार करने हेतू एक उचित कार्यक्रम आरम्भ किया गया है ।

चालू वर्श में ओशधि, लोक स्वास्थ्य तथा सफाई के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति जारी रही । इस वर्श के अन्त तक रिवाड़ी,टोहाना तथा राई में अस्पताल भवनो के निर्माण का कार्य पूरा हो जाने की सम्भावना है जबकि सोहना के परम ीं अस्पताल का निर्माण कार्य भी आरम्भ हो चुका है तथा भिवानी के बड़े अस्पताल के निर्माण का प्रथम चरण भीध्र ही पूरा जो जायेगा। स्वास्थ्य सुरक्षा पर प्रति व्यक्ति उपबन्ध 1975–76 में 10.79 रूपये से पर्याप्त रूप से बढकर चालू वर्श में 11.56 रूपये हो गया है । इसी प्रकार ओशधियो के लिए प्रति व्यक्ति उपबन्ध 1975–76 में 99 पैसे बढाकर 1976–77 में 1रूपया 48 पैसे हो गया । राज्य हर महामारी से मुक्त रहा है और राश्ट्रीय क्षय रोग नियन्त्रण कार्यक्रम के जोरदार कार्यान्वयन से क्षय रोग जैसे भयानक रोगो पर पर्याय नियन्त्रण रहा है । राज्य के सभी जिलो में से 9 जिलो में यह कार्यक्रम चालू किया जा चुका है ।

आ ाा की जाती है कि चालू वित वर्श मे दो अतिरिक्त नगरो को आंि ाक रूप से जल की सप्लाई कद दी जायेगी और इस प्रकार दो भाहरो में आंि ाक रूप से मल–निकास व्यवस्था की सुविधाये उपलब्ध की जायेगी। 1976–77 में 65 गांवो को नल जल सुविधा प्राप्त हो चुकी है। चालू वर्श मे की गई प्रगति के परिणावस्वरूप आ ाा की जाती है कि 924 गांवो को यह आव यक सुविधा प्राप्त हो जायेगी। हमारी सरकार ने जीवन बीमा निगम से इस कार्यक्रम के लिए पर्याप्त वितीय सहायता का लाभ उठाया है और आ ाा है कि भविश्य में भी ऐसी सहायता मिलती रहेगी। राज्य मे जल–सप्लाई स्कीमो के लिए वि व बैंक की सहयता प्राप्त करने के लिए भी एक स्कीम तैयार करके केन्द्रीय सरकार को भेज दी गई है । इस स्कीम द्वारा 138.16 करोड़ रूपये की लागत से 3213 गांवो को यह सुविधा प्रदान करने का प्रस्ताव है।

वातावरण तथा रहन सहन की और अधिकारिक ध्यान दिया जा रहा है । इस संबंध में हरियाणा आवास बोर्ड द्वारा किया गया मार्गद र्ाक कार्य वि ोश रूप से उल्लेखनीय है। पिछले वर्श मार्च के अन्त तक बोर्ड 2900 मकान बना चुका था और यह इस मास के अन्त तक 2000 और मकान बना लेगा। सहकारी क्षेत्र में ि ाखर सहकारी आवास वित समिति भी सहकारी आवास स्कीम तथा माध्यम आय वर्ग आवास स्कीम कार्यान्वित की जाती रही और पात्र व्यक्तियो को ऋण दिये गये । मै 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम

के अनतर्गत कियान्वित की गई वि ोश स्कीमो को पहले ही उल्लेख कर चुका हूं जिनके अंतर्गत उन व्यक्तियो के लिए वित व्यवस्था की जा रही है जिन्हे मकान बनाने के लिए जगह अलाट की गई । इन मामलो मे वित व्यवस्था की सीमा 2400 रूपये से 3000 रूपये तक रखी गई है जो कि मकान लागत का लगभग 80 प्रति ात है । हाल ही में सरकार द्वारा लिये गये निर्ण के अनुसार समाज के आर्थिक रूप से उन कमजोर वर्गो, जिनकी वार्शिक आय 3600 रूपये से कम है तथा जो श्रेणी I और श्रेणी II की नगरपालिकाओ में रहते है के लिए 5000 रूपये तक की कीमत में निर्मित मकान का उपलब्ध किया जाना है। मुझे वि वास है कि सरकार के इन प्रगति ील निर्णयो से समाज के कमजोर वर्गो का जीवन स्तर ऊचा करने में दूरगामी प्रभाव पड़ेगा।

पर्यटन के क्षेत्र में हरियाणा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने में सफल हुआ है । विदे ी तथा दे ा के पर्यटको को व्यवसायिक दक्षता के साथ आव यक सुविधाए जुटाई जा रही है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि कियात्मक मूल्यो के साथ सोंदर्यात्मक मूल्यो का सम्मिश्रण किया गया है । इस क्षेत्र मे लगातार अच्छा कार्य करने के लिए सरकार प्र ांसा की पात्र है। विभाग को सबसे महत्वपूर्ण श्रेय इस बात से प्राप्त होता है कि दे ा के अन्य राज्यो की और से हरियाणा पर्यटन विभाग को पराम र्ा–सेवाए उपलब्ध करवाने के लिए प्रार्थनाएं की गई है ।

इस समय उतर प्रदे ा राज्य में अनेक स्थानो पर तथा ब्यास परियोजना प्र ाासन को भी ऐसी सेवाए जुटाई जा रही है ।

समाज के कमजोर वर्गो,अनाश्रितों, अनाथो तथा निर्धन वर्गो की सुरक्षा तथा कल्याण की ओर सरकार वि ोश रूप से सदा ध्यान देती रही है। उनकी स्थिति सुधारने के लिए विभिन्न स्कीमे आरम्भ की गई है जिनका थोड़ा उल्लेख मैने यहां करना है । उपेक्षित तथा अपचारी बच्चो की ि ाक्षा तथा पुर्नवास के लिए भिवानी में ज्वाहर बाल भवन का निर्माण किया जा रहा है । अनुसूचित जातियो तथा पिछड़ी श्रेणी के कल्याण संबंधी विभाग ऐसी विभिन्न स्कीमों को कार्यन्वित कर रहा है जिनका उदे य इन जातियो तथा श्रेणियो के लोगो के लिए आजिविका के सम्मानपूर्ण साधन जुटाना और उनके उत्थान के लिए आव यक उचित ि ाक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन देना है । उदाहरणतया चालू वित वर्श के दौरान प्राथमिक तथा माध्यमिक श्रेणियों में पढ़ने वाली अनुसुचित जातियो की छात्राओ को वर्दी देने के लिए एक स्कीम भुरू की गई। अनुमान है कि इस स्कीम से 6660 छात्राओ को लाभ होगा । हरिजनो द्वारा चलाए जा रहे ओघोगिक तथा वाणिज्यिक उघमो को वितीय सहायता देने में हरियाणा हरिजन कल्याण निगम सकिय रहा है। निगम ने करनाल में जुता बनाने के केन्द्र, मुरथल मे कार्ड बोर्ड के पैकिंग–डिब्बे बनाने के युनिट,गोहाना में चमड़े की वस्तुए बनाने के केन्द्र की स्थापना की

है तथा इस प्रकार से बनाई अनेक स्कीमो पर कार्य प्रारम्भ किया है ।

निरन्तर बढ रही जनसंख्या के कारण कम हो रहे आर्थिक लाभों का बचाव किया जाना है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने अनेक वर्श पूर्व परिवार नियोजन कार्यक्रम आरम्भ किया था । मुझे यह जानकर हर्श हुआ कि राज्य के लोगो, स्थानीय नेताओ,ओधोगिक प्रबन्धको,श्रमिक संधो तथा समाज के समाजिक तौर पर सतर्क तथा जिम्मेवार अन्य सभी वर्गों के सहयोग से जनसंख्या वृद्वि को रोकने मे हमने सन्तोशजनक प्रगति की है।

समाप्त हाने वाले वर्श में राज्य में कानून तथा व्यवस्था कि स्थिति अच्छी प्रकार नियन्त्रणहीन हो रही । सरकार इस बात की बधाई दी जानी है कि चालु वर्श के दौरान जान तथा माल सम्बधी अपराध वास्तविक रूप से कम हुए है। हरियाणा की पुलिस भाक्ति का अनु ाासन तथा प्र ाक्षण उल्लेखनीय रहा है। प्र ाक्षण सुविधाओ में निरन्तर सुधार किया गया है और आधुनिक दूर संचार उपस्कर की व्यवस्था एवं परिवहन सुविधाओ से कार्यकु ालता में पर्याप्त वृद्वि हुई है। मधुबन में आद र्ा कैम्पस स्थापित किया जा रहा है जहां पर राज्य पुलिस प्र ाक्षण कालेज तथा राज्य विधि विज्ञान प्रयोग ााला भी होगी, जिसमें कार्य भुरू हो चुका है। यह आ ाा की जाती है कि हरियाणा पुलिस अपनी

कार्यकु ालता के लिए विख्यात रहेगी जोकि भाान्ति,व्यवस्था तथा अनु ाासन की परिस्थति में राज्य के विकास के लिए अनिवार्य है।

यह स्पश्ट ही है कि समाप्त होन वाले वर्श में महत्वपूर्ण सर्वागीण उपलब्धियां हुई है। राज्य अपने प्रगति के रिकार्ड को बनाए रखने तथा उसमें सुधार करने में संक्षम रहा है। राज्य में अनु ाासन और भाान्ति भी बनी रही है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राज्य के लोगो द्वारा सरकार को पूर्ण समर्थन एवं सहयोग दिए जाने के कारण ही ऐसा सम्भव हुआ है।

अब आप उस महत्वपूर्ण कार्य में व्यस्त हो जाएंगे जिस के लिए आप सब एकत्रित हुए है । आप के विम र्ा ने राज्य के भाग्य का स्वरूप निर्धारित करना है । मुझे आ ाा है कि इसके परिणामस्वरूप राज्य के विकास की गति त्रीव होगी तथा इस राज्य के लोगो की समृद्वि और उज्जवल भविश्य की प्राप्ति होगी जिसके वे पूर्णतया अधिकारी है।

कार्यमन्त्रणा समिति का प्रथम प्रतिवेदन

Mr. Speaker: I Report the time table fixed by the Business Advisory Committee in regard to various Business.

The committee met at 2.45 p.m. on Wednesday, the 23rd March, in the chamber of the speaker.

The Speaker presented the First Report of the Business Advisory Committee.

The Committee, after, some discussion, recommends that the Assembly will met on the 23rd March, 1977 (half-an-hour after the conclusion of the Governor's Address) and transact the following Business.-

1. Laying of a copy of the Government Address on the table of the House.

2. Presentation and Adoption of the First Report of the Business Advisory

Committee.

3. Motion regarding suspension of rule 30 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly and transaction of Government Business on Thursday, the 24th March, 1977.

4. Obituary References

2. The Committee also recommended that on the 24th and 25th March, 1977, the Assembly will hold two sittings i.e. at 9.30 a.m. and 2.00 p.m. on each day and transact the business as follows:-

Thursday, the 24th March, 1977.

First Sitting (9.30 a.m.)	1. Question Hour. 2. Presentation to be laid on

	the table of the House including Ordinances etc. 3. Presentation of Supplementary Estimates (Third Installment) for the year 1976-77 and the Report of the Estimate Committee thereon. 4. Presentation of Excess Demands for over Grants Appropriations. 5. Motion regarding postponed in favour of financial and other (date bound) Government Business and that the discussion on the Address be adjourned to a subsequent day to be appointed by the Speaker.”
Second Sitting (2.00 p.m.)	(1). Discussion and Voting on Demands for Supplementary Estimates (Third Installment) for the year 1976-77. (2). Discussion and Voting on Excess Demands for Grants over Appropriations.

	(3). Legislative Business.

Friday, the 25th March, 1977

First Sitting (9.30 a.m.)	1. Question Hour. 2. General discussion on Budget.
Second Sitting (2.00 p.m.)	1. Extension of the term of the Committee on Welfare of Scheduled Castes. 2. Discussion and Voting on Demands for grants on Budget.

The Committee further recommended that the assembly will also meet on Saturday, the 26th March, 1977, at 9.30 a.m. to transact the following business-

1. Question Hour.

2. Appropriation Bill on Budget.

3. Appropriation Bill on supplementary Estimates.

4. Appropriation Excess Demands for Grants over Appropriations.

5. Legislative Business.

Transport minister (Sh. K.L. Poswal moved:- Sir, I beg to move:-

"That this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee."

Mr. Speaker: Motion moved:-

"That this House agrees with the recommendations contained in the First Report of the Business Advisory Committee."

चोधरी राम लाल वधवा(करनाल): स्पीकर साहब, मेरी प्रार्थना है कि अब तो एमरजैंसी खत्म हो गई है, ऐसा क्या हो गया कि नान–आफि ायल डे को भी आफि ायल डे मे कन्वर्ट किया जा रहा है और दो–दो सिटिंग्ज हो रही है। मेरा रैज्योल्यू ान बैल्ट के अन्दर आया है उस पर बहस होनी चाहिए। लेकिन मुझे समझ नही आती कि सरकार भाग क्यों रही है अगर इसे भागना ही है तो वैसे ही इस्तीफा दे दे .....(ाोर)

मुख्यमंत्री(श्री बनारसी दास गुप्ता): आपने जो तीर चलाना है कल चला लेना, परसो चला लेना.....(ाोर)

चोधरी राम लाल वधवा: उसकी फिकर क्यो करते हो वह जो जनता चलाएगी। स्पीकर साहब, मेरी प्रार्थना है कि सै ान आराम से चलाया जायें । दो–दो सिटिंगज करने की कोई वजह तो होनी चाहिए। फिर नान–आफि ायल डे को उड़ाना ठीक नहीं

है। एक महत्वपूर्ण रैजोल्यू ान बैलट में आया हुआ है कि जोकि 18 साल की आयु वाले को वोट का हक देने के बारे में कॉंस्टीच्यू ान अमैड करने के लिए है, उस पर बहस होनी चाहिए.. .....(विध्न)––

श्री बनारसी दास गुप्तः यह तो सैट्रल गवर्नमैंट ने करना है। अब आपकी सरकार बन गई है, अब कर देना ––(ाोर)

Mr. Speaker: Order please. No repetitions.

चौधरी ि ाव राम वर्माः स्पीकर साहब मेरी प्रार्थना यह है कि हफते में केवल एक दिन नान–आफि ियल डे होता है उसको भी आफि ियल बनाना ठीक नही है।

श्री के. एन. गुलाटीः स्पीकर साहब, इनको मंजूर नहीं तो बाहर चले जाएं ––(ाोर)

Mr. Speaker: Order please.

चोधरी राम लाल वधवाः छाज तो बोले छलनी क्या बोले.....

चौधरी ि ाव लाल वर्माः स्पीकर साहब, मै एक बात पूछना चाहता हूं कि गैर सरकारी दिन को सरकारी दिन में इसलिये तो नहीं बदला जा रहा हूं कि विरोधी पक्ष के एक विधायक का रैजोल्यू ान आया हुआ है ? ऐसा करने का इनको क्या अधिकार है ? क्या ये अभी तक भी जनता की अवाज नहीं

समझें। मेरा निवेदन है कि कल और अगला वीरवार गैर सरकारी तौर पर काम के लिए चलना चाहिए। दिन बहुत पड़े है चाहिये ये एक महीना सै ान चला ले ।

परिवहन मंत्री(श्री के.एल.पोसवाल.): बजट 30—3—77 तक पास होना है।

गृह तथा स्वास्थ्य राज्य मंत्री(श्री मति भाारदा रानी): स्पीकर साहब, अब सैंटर में इनकी सरकार बन गई है अब इनको जिम्मेदाराना ढंग से बात करनी चाहिए.....(ाोर)

चौधरी प्रताप सिंह चौटाला: स्पीकर साहब, मेरी अर्ज यह है कि आप जैसे तजुर्बेकार आदमी का यह कहने की जरूरत नहीं है कि यह गैर सरकारी प्रस्ताव का दिन है यह पार्लियामेंटरी प्रैक्टिस में निहायत ही जरूरी प्रोविजन है ।

श्री के.एल. पोसवाल: रूल 30 के बारे में अगली अमेडमैंट आ रही है उस वक्त कह लेना ।

Mr. Speaker: Question is-

That this house agrees with the recmmendations contained in the First Report of the Busniness Advisory Committee.

The motion was carried.

नियम 30 के अधीन प्रस्ताव

Transport Minister(Shri K.L. Poswal): Sir, I beg to move-

that rule 30 of the Rules of Procedure and Conduct of Busniness in the Haryana legislative Assemble be suspended and Government Business be transcted on Thursday, the 24the March, 1977.

Mr. Speaker: Motion moved-

that rule 30 of the Rules of Procedure and Conduct of Busniness in the Haryana legislative Assemble be suspended and Government Business be transcted on Thursday, the 24the March, 1977.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता(बेरी): स्पीकर साहब आप और लीडर आफ दी हाउस इस हाउस के कस्टोडियन है । मै आपसे अर्ज करना चाहता हूं कि यह हमारा जो प्रिविलेज है उसको हाउस की कंसैट के बगैर छीना जा रहा है यानि कल नान–आफि ायल डे को आफि ायल डे में कनवर्ट किया जा रहा है, यह ठीक नहीं है। इस प्रैक्टिस को हमे ऐड करना चहिये और नान आफि ायल डे को नान आफि ायल डे ही रखा जाना चाहिए। इसको आफि ायल डे में तबदील करने का कोई रीजन मालूम नहीं होता है। अब अराम से बजट सै ान चलना चाहिये, क्या जल्दी है ? मुझै इस बात से मतलब नहीं कि कितने दिन चलना चहिए लेकिन मै इस हाउस के राइटस असर्ट करना चाहता

हूं that-non official day should be not summarily be utlized for official work. With this, I request through you, sir to the Leader of the House to reconsider this matter. It is very serious matter and in Parliament it has never been done.

मुख्यमंत्री(श्री बनारसी दास गुप्त): अध्यक्ष महोदय, ऐसा है कि रूल्ज के अन्दर प्रोवीजन है जब भी कभी ऐसी आव यकता पड़े या कोई कठिनाई आए तो हम नान–आफि ायल–डे को आफि ायल डे मे बदल सकत है । अध्यक्ष महोदय, आप इस बात को अच्छी प्रकार जानते है कि हमने 31 मार्च से पहले बजट को पास करना है और अगर हम बजट पास नही करेंगे सरकार का काम बंद हो जायेगा । टाईम हमारे पास बहुत कम है इसलिये ऐसा करना पड़ा। मै हाउस को यह आ वासन देता हूं कि हफते नान–आफि ायल डे को आफि ायल डे ही रखेगे उस दिन हम गैर सरकारी बिजनैस पर डिस्क ान कर लेगे।

Mr. Speaker: Question is-

that rule 30 of the Rules of Procedure and Conduct of Busniness in the Haryana legislative Assemble be suspended and Government Business be transcted on Thursday, the 24the March, 1977.

The motion was carried.

भोक प्रस्ताव

Mr.Speaker: Obiturary References.

मुख्यमत्री(श्री बनारसी दास गुप्त):– अध्यक्ष महोदय, जब कभी भी हम इस पवित्र सदन में इकट्ठे होते है तो हमे अपने और कर्तव्य के साथ–साथ एक खेदजनक कर्तव्य का भी निर्वहन करना पड़ता है हि हमारे जो दिवंगत नेता है उनके प्रति हम भाोक प्रकट करते है लेकिन अध्यक्ष महोदय, इस बार हमारे राश्ट्र को इतनी भारी क्षति पूर्ति होना ने केवल कठिन है बल्कि असंभव है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन भारत के पांचवे राश्ट्रपति श्री फखरूदीन अली अहमद के 11 फरवरी 1977 को हुए दुखद निधन पर गहरा भाोक व्यक्त करता है।

श्री फखरूदीन अली अहमद का जन्म 13 मई 1905 को दिल्ली में हुआ। उनके पिता कर्नल जैड.ए. अहमद मूलतः असम के गोलाघाट उप–मण्डल के निवासी थे। श्री फखरूदीन अली अहमद ने प्रारम्भिक ि ाक्षा उतर प्रदे ा के गोण्डा नामक स्थान के राजकीय हाई स्कूल में पाई और ओर उसके प चात उन्होने सेंट स्टीफेंस कांलिज, दिल्ली एवं सैंट कैथरीन कालेज कैम्ब्रिज वि ववविधालय मे ि ाक्षा प्राप्त की। कानून का पाठ्यकम पूरा करने के बाद 1928 में वह इनर टेम्पल में बैरिस्टर के रूप में प्रविश्ट हुए। भारत लोटने पर श्री अहमद ने अपना नाम बतौर एडवोकेट पंजाब उच्च न्यायलय मे नामांकित करवाया। किन्तु उसी वर्श वह असम चले गये।

इसके बाद वह काग्रेस में सम्मिलित हो गए और 1931 के उथल–पुथल के दिनो में राजनीति में कूद पड़े। 1935 मैं असम विधानसभा के लिए चुने गये और 1938 में श्री गोपीनाथ बारदोलाई के नेतृत्व में गठित कांग्रेस के पहले मंत्रिमंडल में उन्होने वित एवं राजस्व मंत्री का कार्यभार सम्भाला। उन्होने 1939 और 1945 के दौरान कई बार जेल यात्रा की ।

श्री अहमद 1954 से 1957 तक राज्य राज्य सभा के सदस्य रहे। उन्होने 1955 में रूस जाने वाले भारतीय वकील ि ाश्टमण्डल का नेतृत्व किया। वह 1957 में भारतीय ि ाश्टमण्डल के सदस्य के रूप में संयुक्त राश्ट्र गये। वह 1957 से 1966 तक असम मंत्रिमण्डल तक में भी रहे।

श्री अहमद अप्रैल, 1966 में पुनः राज्यसभा के लिए चुने गए और उन्होने केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में ि ाक्षा मंत्रालय का कार्यभार सम्भाला।

वह 1967 के आम चुनावे में असम के बरपेटा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए और ओघोगिक विकास एवं कम्पनी कार्य विभागो मे मन्त्री नियुक्त किए गए। उन्होने जून 1970 में कृशि मंत्री के पद का दायित्व सम्भाला तथा मार्च 1971 के आम चुनावो में लोकसभा के लिए निर्वाचित होने पर वह पुनः कृशि मंत्री के पद पर आसीन हुए और जुलाई 1974 तक इस पद पर कार्य करते रहे। अगस्त, 1974 में वह भारत के

राश्ट्रपति पद पर निर्वाचित हुए और निधन तक इसी पद पर आसीन रहे।

श्री फखरूदीन अली महमूद साहब दे ा के उन महान नेताओ में से एक थे जिन्होने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दे ा के सर्वोच्च पद पर उनका आसीन होना उनके गत 40 वर्शो से भी अधिक वि िाश्ट राजनितिक जीवन की चरम परिणति थी।

लोकतन्त्र,समाजवाद और धर्म निरपेक्षता में उनकी अटूट आस्था थी । उन्होने राश्ट्रीय एकता को सुदृढ बनाने में महत्वपूर्ण योग दिया।

वह अपने सरल मन, निस्वार्थ सेवा, मृदुभाशिता और ि िाश्ट स्वभाव के लिए विख्यात थे। वह अपनी व्यवस्तताओ के होते हुए भी खेलो में भारी रूचि रखते थे और उन्होने दे ा में खेलो के प्रोत्साहन के कार्य में वि िाश्ट योग दिया।

यह सदन दिवंगत राश्ट्रपति के भाोक–संतप्त परिवार के सदस्यो से अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन महाराश्ट्र के राज्यपाल श्री अली यावर जंग बहादुर के 11 दिसम्बर, 1976 को हुए दुखद निधन पर गहरा भाोक प्रकट करता है।

श्री अली जंग बहादुर का जन्म 16 फरवरी,1905 को हुआ। उन्होने पहले हैदराबाद में और तत्प चात आक्सफोर्ड में ि ाक्षा प्राप्त की। उन्होने अपना व्यवसायिक जीवन उस्मानिया वि वविघालय में एक ि ाक्षाविद् के रूप में आरम्भ किया। वह पुरानी हैदराबाद सरकार में कई महत्वपूर्ण पदो पर कार्य करते रहे, किन्तु 1947 में उन्होने संयुक्त रूप राश्ट्र को जाने वाले कई भारतीय ि ाश्टमण्डलो का नेतृत्व भी किया और बाद में विभिन्न दायित्व निभाने के सम्बन्ध में वह फ्रांस,ग्रीस,यूगोस्लाविया, लीबिया,लेबनान और सयुक्त राश्ट्र भी गए।

उन्होने 1965 से 1968 तक अलीगढ़ मुस्लिम वि वविघालय के कुलपति पद को सु ाोभित किया। 1970 में उन्होने महाराश्ट्र के राज्यपाल के पद को सम्भाला और निधन तक इसी पद पर आसीन रहे। उन्हे पद्म भूशण से अलंकृत किया गया।

उनके निधन से दे ा ने एक महान कूटनीतिज्ञ तथा प्र ाासक खो दिया है।

यह सदन दिवगंत के भाोक–संतप्त परिवार के सदस्यो से अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन भारतीय राश्ट्रीय काग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं भूतपूर्व संसद सदस्य श्री उच्छृंग राय

नवल ांकर ढेबर के 11 मार्च, 1977 को हुए दु:खद निधन पर गहरा भाोक प्रकट करता है।

श्री ढेबर का जन्म 21 सितम्बर, 1905 को हुआ। उन्होने 1928 मे वकालत की परीक्षा पास की। इसके बाद वह राजकोट में 1929 तक वकालत करते रहे। वह 1936 में पहली बार महात्मा गांधी जी से मिले और वकालत की प्रैक्टिस छोड़कर आस–पास के गांवो में सहायता कार्य करने लगे। उन्होने कांग्रेस दल के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया।

श्री ढेबर ने 1937 में मोरीबन्द काठियावाला राजनीतिक सभा को पुनरजीवित किया ओर इसके सेक्रेटरी पद का दायित्व सम्भाला। वह इस पद पर 1948 तक रहे। राजकोट सत्याग्रह में भाग लेने के कारण 1938–39 में उन्होन तीन बार जेल यात्रा की। 1941 में उन्होने वैयक्तिक रूप से सत्याग्रह किया। 1942 के 'भारत छोड़ौ' आन्दोलन में भाग लेने पर पुनः जेल जाना पड़ा। 1945 मैं वह गुजरात प्रेद ा कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी चुने गये।

श्री ढेबर ने 1948 से 1954 तक सोराश्ट्र राज्य के मुख्यमन्त्री पद को सु ाोभित किया। सोराश्ट्र के पिछले क्षेत्रो की समस्याओ को उन्होने अत्यन्त साहसपूर्ण ढंग से सुलझाया। वह 1955 और 1957 में भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। वह पुरानी प्रेरणात्मक–वृति के लिए सुविख्यात थे। महात्मा गांधी ने उन्हे एक साहसी एवं सच्चा सुधारक कहा था। वह मित–भाशी थे

और कांगेस दल में उन्हे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। सादगी एंव सच्चाई के गुणो के कारण उनका व्यक्तित्व और भी महान् हो गया था। वह 1962 में लोसभा सदस्य निर्वाचित हुए, किन्तु खादी आयोग के चेयमैन पद पर नियुक्त होने के कारण उन्होने संसद की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया।

यह सदन दिवंगत नेता के भाोक–संतप्त परिवार के सदस्यो से अपनी हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करता है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन भूतपूर्व केन्द्रीय खाद्य एवं पूर्ति मंत्री श्री अजीत प्रसाद जैन के 2 जनवरी, 1977 को हुए दु:खद निधन पर गहरा भाोक प्रकट करता है।

श्री जैन का जन्म 1902 में हुआ। उन्होने एम.ऐ. और एल.एल.बी. की परीक्षाएं लखनउ वि वविद्यालय से उर्तीण की। श्री जैन अपने राज्य, उतर प्रदे ा में कई राजनीतिक आन्दोलनो में अग्रणी रहे। उतर प्रदे ा विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होन के उपरान्त उन्हे 1937 में गठित पहले मन्त्रिमण्डल में कनिश्ट मंत्री नियुक्त किया गया। वह सविधान सभा के सदस्य भी रहे।

श्री जैन 1950 में केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित हुए और उन्हे सहायता एवं पुनर्वास मंत्री नियुक्त किया गया ओर बाद में उन्होने खाद्य मंत्रालय का कार्यभार सम्भाला। वह 1960 से 1964 तक उतर प्रदे ा कांग्रेस कमेटी के प्रधान रहे। उन्होने थोड़ समय के लिए 1965–66 में केरल राज्य के राज्यपाल पद को भी

सु ाोभित किया। इसके प चात् वह पुनः सकिय राजनीति में लोट आये।

उनके निधन से दे ा का उच्च कोटि के नेता तथा कु ाल प्र ाासक की सेवाओ से वंचित हो गया है।

यह सदन दिवंगत के भाोक–संतप्त परिवार के सदस्यो से अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के अपर न्यायाधिपति न्यायमूर्ति श्री देवेन्द्र सिंह लाम्बा के 26 नवम्बर 1976 को हुए दुखद एवं असामयिक निधन पर गहरा भाोक प्रकट करता है।

श्री लाम्बा का जन्म जिला भिवानी के गांव अलखपुरा में 15 अप्रैल, 1929 को हुआ। उन्होने ि ाक्षा लाहौर और रोहतक में प्राप्त की और कानून की परीक्षा दिल्ली वि वविद्यालय से उतीर्ण की। उन्होने अपनी आजीविका 1953 में हिसार में अधिवक्ता(प्लीडर) के रूप में आरम्भ की और 1964 से 1968 तक सरकारी रिसीवर के रूप में कार्य करते रहे। 1962 में उन्होने अपने को पंजाब उच्च न्यायालय के एडवोकेट के रूप में नांमांकित करवाया।

श्री लाम्बा 1970 में पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय की विधि परिशद् के सदस्य निर्वाचित हुए और 1974 में इसी परिशद के सर्वसम्मति से चेयरमैन चुने गये। वह पंजाब

वि वविद्यालय की विधि संकाय की दो पदावधियो के लिए 1971से 1975 तक सदस्य चुने गये।

वह अक्टूबर, 1970 में उप–महाधिवक्ता नियुक्त हुए और बाद में पहली जुलाई, 1974 को उन्हे वरिश्ठ उप–महाधिवक्ता नियुक्त किया गया। वह 6 मार्च, 1976 को पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के अपर नयायाधिपति के पद पर नियुक्त हुए।

उनके निधन पर हरियाणा राज्य के एक प्रख्यात विधिवेता,प्रतिश्ठित नागरिक और एक मानवतावादी महापुरूश की सेवाओ से वंचित हो गया है।

यह सदन दिवंगत के भाोक–संतप्त परिवार के सदस्यो से अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

अध्यक्ष महोदय, हमें यह बताते हुये दुःख होता है कि श्रीमती लज्जारानी जो पिछले से ान में हमारे बीच बैठी हुई थी, आज हमारे बीच में से उठ गई है।

इसलिये यह सदन बाढड़ा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हरियाणा विधानसभा की सदस्या श्री मति लज्जा रानी के पहली मार्च 1977 को हुए दुखद निधन पर हार्दिक भाोक प्रकट करता है।

श्री मति लज्जा रानी का जन्म जिला भिवानी के गांव अलखपुरा में 14 मई 1920 को हुआ। उनके पिता का नाम चौधरी

मामचन्द था। उनके पिता स्वर्गीय श्री अमीर सिंह हरियाणा मंन्त्रिमण्डल में राज्य मंत्री थे।

वह कई वर्शो तक पंचायत ग्राम झोझूकलां की सदस्या रही और 1964 में पंचायत समिति की सदस्या निर्वाचित हुई। वह अमीर सिंह ि ाक्षा स्मारक संस्था की उप–प्रधान भी थी।

श्री मति लज्जा रानी समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान में वि ोश रूचि लेती थी। उनकी समाजिक गतिविधियो में हरिजन कल्याण, बाल कल्याण, ग्राम स्वच्छता तथा महिला समितियो का संगठन आदि कार्य प्रमुख थे।

यह सदन दिवंगत के भाोक–संतप्त परिवार के सदस्यो से अपनी हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करता है।

अध्यक्ष महोदय यह सदन भूतपूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री आर.एम.हजारनवीस के 28 दिसम्बर 1976 को हुए दु:खद निधन पर भाोक प्रकट करता है।

श्री आर.एम.हजारनवीस का जन्म 24 फरवरी 1908 को हुआ। उन्होने बी.एस.सी. की परीक्षा मॉरिस कॉलिज से और एल. एल.बी. की परीक्षा वि ववि‌द्यालय लां कालेज, नागपुर से उतीर्ण की।

वह 1941 से 1944 तक 'बीड़ी कामगार संध' के प्रधान रहे। 1955 में उन्होने नागपुर निगम कॉउंसलर पद का दायित्व

निभाया। वह 1956 मे 'जनता सहकारी आवास' समिति के चेयरमैन भी रहे।

श्री हजारीनवीस 1957 से दिसम्बर 1969 तक लोकसभा के सदस्य रहे । 1958 में वह केन्द्रीय मंत्रि परिशद् मे सम्मिलित हुए और समय समय पर उन्होने खान एवं ईधन, गृह, आपूर्ति, सांसकृतिक कार्य, विधि तथा समाजिक सुरक्षा एवं श्रम मंत्रालयो का कार्यभार सम्भाला।

यह सदन दिवंगत के भाोक–संतप्त परिवार के सदस्यो से अपनी हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करता है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन विख्यात मार्क्सवादी नेता श्री ए.के.गोपालन के 22 मार्च 1977 को हुए दःखद निधन पर गहरा भाोक प्रकट करता है ।

श्री गोपालन केरल राज्य के कैन्नोर जिले में 1 अक्टूबर, 1904 को पैदा हुए। उन्होने मि ान हाई स्कूल तथा ब्रैन्नन कालेज तिलिचरी से ि ाक्षा प्राप्त की और अपने जीवन की भाुरूवात एक अध्यापक के रूप मे की। 1927 में अखिल भारतीय कांग्रेस में सम्मिलित हो गए और स्वाधीनता संधर्श में कूद पड़े। श्री गोपालन अनेको वर्शो तक कांग्रेस महासमिति के सदस्य और केरल प्रदे ा कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे ।कुछ समय का उनका सम्बन्ध काग्रेस सो ालिस्ट पार्टी से भी रहा।

श्री गोपालन का ट्रेड युनियनो और किसान आन्दोलनो से वि ोश सम्बन्ध रहा। उन्होने कृशक वर्ग में जन–चेतना पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अनेको बार वह जेल गए और 5 साल तक भूमिगत भी रहे। 1939 में वे कम्यूनिस्ट पार्टी में भाामिल हुए और 1941 में उन्हे बन्दी बना लिया गया। अपने बन्दी जीवन में श्री गोपालन वैल्लोर जेल से भाग निकले और 1946 में अपने अज्ञातवास से बाहर आये।

1952 के आम चुनावो मे वह पहली बार लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए और लगातार पिछली जनवरी तक जब कि लोसभा भंग हुई, सदस्य बने रहे।

उनके निधनसे दे ा ने एक महान् प्रगति ाील नेता और विख्यात स्वाधीनता सेनानी खो दिया है।

यह सदन दिवंगत के भाोक–संतप्त परिवार के सदस्यो से अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

चोधरी रिजक राम(राई): स्पीकर साहब, जिन महापुरूशो के स्वर्गवास होने पर मुख्यमंत्री जी ने भाोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है और जो विचार प्रकट किए है, मै उनके साथ सहमति प्रकट करता हूं। इसमे काई सन्देह नहीं कि इस मौका पर इन महापुरूशो के दे ा से चले जाने पर दे ा को बड़ी भारी हानि हुई है। इन्होने दे ा को बनाने में, बड़ा भारी भाग लिया है। इस समय, जबकि दे ा को उनकी बड़ी भारी आव यकता थी, वे

हम से जुदा हो गए। इसमें हमे और हमारे दे ा को बड़ा भारी खेद और दुख है।

श्री फखरूदीन अली अहमद, भारत के राश्ट्रपति के साथ मुझे पार्लियामैंट मे काम करने का मौका मिला, काग्रेस के न होते हुए भी मुझे कितनी बार उनसे वास्ता पड़ा। स्पीकर साहब, जिस समय दे ा को दो अलग अलग राश्ट्र, जाति की बिना पर बनाने की हवा चल रही थी, मुस्लिम लीग की तरफ से जो आंधी चल रही थी, उस समय वे राजनीति में दाखिल हुए और इस बात के प्रयत्न करते रहे कि दे ा में हिन्दू और मुस्लिम के नाम पर विभाजन न हो। जो विभाजन के पक्ष में थे, उनके साथ इन्होने टक्कर ली और आखिर तक इस सिद्वान्त के हामी रहे। जो विचार मुख्यमंत्री ने प्रकट किए है, मै उनके साथ सहमत हूं।

श्री उच्छृंगराय नवल ांकर ढेबर भाई आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के प्रधान रहे और इन्होने अपनी प्रधानता के समय सबसे ज्यादा इस बात पर जोर दिया कि कांग्रेस में भाामिल होने वाले सदस्य, चाहे वे निर्वाचित सदस्य हो, चाहे आम सदस्य हो, चरित्रहीन नहीं होने चाहिएं। सदस्य का चरित्र उंचा होना चाहिए। वही भाामिल होना चाहिए जो रचनात्मक कामों में भाग ले, वही सही मायनो में गांधी जी की फिलासफी थी, यही उनका सिद्वान्त था। इन्होने गांधी जी की फिलासफी के मुताबिक, सिद्वान्त के मुताबिक रचनात्मक कार्य करने में जो श्रम किया है, दे ा जो रास्ता दिखाया है, उसकी भाायद ही काई मिसाल हो। इन्ही के

समय में आद र्ावाद पर और सिद्वान्त पर काम करने पर जोर दिया गया। इनके निधन से दे ा को बड़ी भारी हानि हुई है, इसमे काई सन्देह नहीं है।

श्री देवेन्द्र सिंह लाम्बा जी के बारे में चौधरी प्रताप सिंह जी को ज्यादा वाकफियत है, वे अपने विचार सदन में रंखेगे। जहां तक मुझे वास्ता पड़ा है आम आदमी भी यही कहता है कि जब वे डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में काम करते थे या जब सिनीयर डिप्टी एडवोकेट जनरल के तौर पर काम करते थे, वे अपना कार्य बड़ी कु ालता से करते थे। काई भी आदमी जिनसे उनका वास्ता पड़ा है, कोई नुक्ताचीनी नहीं करता, हरेक की जबान पर उनकी तारीफ थी.....उनकी भाराफत की, उनके सदाचार की और उनकी सद्भावना की। सब लोग उनकी प्र ासा करते थे।

श्री मति लज्जा रानी, जो इस सदन की एक सदस्या थी, बहुत पिछड़े इलाके से ताल्लुक रखती थी। इन्हाने मेम्बर बनने के बाद उस इलाके की जो सेवा की है, उसकी मिसाल कही नही मिलती। स्पीकर साहब, मुझे उनके इलाके पास जाने का मौका मिला है। इनके स्वर्गीय पति की बड़ी भारी इज्जत है, सम्मान है क्योंकि इन्हाने निश्पक्ष तौर पर उस इलाके की सेवा की। इनके अलावा अन्य महानुभावो के प्रति जो भाोक प्रस्ताव रखा गया है, मै उनके साथ सहानुभूति प्रकट करता हूं कि परमात्मा उनकी आत्मा का भाान्ति दे।

चौधरी भजन लाल (आदमपुर): आदणीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने जो भाोक प्रस्ताव सदन में रखा है, मै इससे सहमति प्रकट करता हूं। पिछले सदन के उठने से अब तक के समय दौरान आठ नामो की सूची हमारे सामने है। इस सूची में दिवंगत नेता है जिन्होने दे ा की जनता की सेवा करने के लिए बड़ा भारी योगदान दिया है। मै श्री फखरूदीन अली अहमद जी के बारे में थोड़ा सा कहना चाहूगा क्योंकि मेरा उनसे काफी लगाव रहा है। अहमद साहब बड़े महान व्यक्ति थे। जब भी कोई बड़े से बड़ा मसला आता सामने आता, चाहे वह समाज का मसला था, चाहे सारे दे ा का मसला था, वे बड़ी सूझ–बूझ के साथ गौर करते थे और उसको निपटाते थे। उनकी भावना, बड़ी पवित्र भावना रही है। इस प्रस्ताव मे दी गई दिवंगत आत्माओ को अपनी तरफ से मै श्रद्वाजंलि भेट करता हूं और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार के सदस्यो को इस दु:ख को सहन करने की भाक्ति दे और उनकी आत्मा को सद्गति मिले।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, श्री अली यावर जंग बहादुर के निधन पर मैं भाोक प्रकट करता हूं। उन्होंने 1965 से 1968 तक अलीगढ मुस्लिम वि वविद्यालय के कुलपति पद को सु ाोभित किया। 1970 में उन्होने महाराश्ट्र के राज्यपाल के पद को सम्भाला और निधन से दे ा ने एक महान् कूटनीतिज्ञ तथा प्र ाासक खो दिया। मै उनके प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री ढेबर, भूतपूर्व अध्यक्ष, भारतीय राश्ट्रीय काग्रेस के प्रति मै सदन से निवेदन करूंगा कि इनका जीवन ब़ड़ा महान जीवन रहा है और काग्रेस को एक बेहतरीन रास्ता इन्होने अपने कार्यकाल में दिखाया । मै परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वे दिवंगत आत्मा को भाान्ति तथा उनके परिवार को उनके निधन से हुए दु:ख को सहन करने की भाक्ति प्रदान करे ।

श्री अजीत प्रसाद जैन, भूतपूर्व केन्द्रीय खाद्य एवं कृशि मंत्री, के प्रति भी मै अपनी संवेदना प्रकट करता हूं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वे उनकी आत्मा को भाान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस दुख को सहने की भाक्ति दे।

श्री देवेन्द्र लाम्बा, अपर न्यायाधिपति, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के बारे में अध्यक्ष महोदय आप जानते है कि वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हाने हमारे प्रान्त को जो क्षति हुई है, मै समझता हूं कि वह पूरी नही होगी। मै उनके प्रति श्रद्वांजली अर्पित करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करता हुं कि वे उनकी आत्मा को भाान्ति तथा उनके परिवार को इस दु:ख को सहने की भाक्ति प्रदान करे ।

श्री मति लज्जा रानी इस सदन की सदस्या थी। उनके लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वे उनकी आत्मा को भाांति प्रदान करे । उनका और उनके पति स्वर्गीय मेजर

साहब का जीवन अपने इलाके के पिछले वर्ग की सेवा करने का रहा है। उन्होने कई संस्थाओ में भी अपना योगदान दिया है। उनके प्रति भी मै श्रद्वांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री आर.एम. हजारनवीस, भूतपूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री के प्रति भी मै अपनी श्रद्वांजलि अर्पित करता हूं। ई वर उनकी आत्मा को भाान्ति तथा उनके परिवार को उनके निधन के दु:ख को सहने की भाक्ति प्रदान करे, यही मेरी प्रार्थना है ।

श्री ए.के. गोपालन, मार्कसवादी नेता, जिनका जीवन सदा ट्रेड यूनियन और किसान आन्दोलन से सम्बन्धित रहा है, के प्रति भी मै श्रद्वांजलि अर्पित करता हूं ओर परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को भाांति तथा उनके परिवार को दु:ख सहन करने की भाक्ति प्रदान करे। इन भाब्दो के साथ मै इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

ि ाक्षा मंत्री(पंडित चिरंजी लाल भार्मा): स्पीकर साहब, लीडर आफ दी हाउस ने जो मरहूम नेताओ को श्रद्वाजलि अर्पित करने के लिए रैजोल्यू ान मूव किया है मै अपने आपको उसके साथ जोड़ता हूं। श्री फखरूदीन अली अहमद से, जो हमारे प्रैजिडैन्ट थे मेरा जाति सम्पर्क तो नहीं हुआ लेकिन एक दो बार उनसे मिलने का सौभाग्य मुझे जरूर प्राप्त हुआ है। जब वे यहां त ारीफ लए प्रैजिडैन्ट के इलैक ानो के लिए बतौर कैडिडेट के और हमारी काग्रेस लैजिसलेचर पार्टी की गैस्टहाउस में मीटिंग थी

उस वक्त जो नम्रता, जोइख्लाक और जो इन्सानियत उन्होने दिखाई उसने हमारे उपर एक एक छाप छोड़ी। हमने उनसे प्रार्थना की कि आप के आने की क्या आव यकता थी जबकि हमारी पार्टी का आदे ा हमारे सामने था तो उनका जवाब था कि बतौर कैडिंडेट के वोटर्ज के पास पहुंचना मेरा फर्ज था। हम उस वक्त नीचे बैठे हुए थे। वे भी नीचे आकर बैठ कर बड़े आराम से हमारे साथ बात करते रहे। ऐसे इन्सान दुनियां में कम मिलते है। दे ा के लिए उनकी कुर्बानी का जहां तक सम्बन्ध है, उसके बारे में मै अर्ज करना चाहता हूं कि ब्रिटि ा सम्राजय से आजादी की लड़ाई के समय वे किसी से पीछे नही रहे । उनकी आधी जवानी काली कोठरियो में गुजरी। राश्ट्रपति बनने के बाद भी कोई चेंज उनकी इन्सानियत में नहीं आई। मै समझता हूं यही उनका बड़प्पन था। ऐसे वक्त में, जबकि दे ा को उनकी बहुत आव यकता थी।उनका देहान्त बहुत दु:खदायी है लेकिन परमात्मा के सामने किसी का जोर नहीं चलता। हमें सदमें को बर्दा त करना ही पड़ता है लेकिन मेरी प्रार्थना है कि वह मरहूम की रूह को भाांति और उनके परिवार को इस सदमें को बर्दा त करने की भाक्ति दे।

श्री देवेन्द्र सिंह लाम्बा, क्योंकि वे अपने अजीज थे, एक निहायत भारीफ, इख्लांकि और मिलनसार इन्सान थे। वे भाराफत के पुतले थे और यह चीज उस समय देखने में आई जब वे डिप्टी ऐडवोकेट जनरल,सीनीयर डिप्टी ऐडवोकेट बने और बैच पर

इलैक्ट हुए क्योंकि उसके बाद भी उनमें कतन फर्क नहीं आया। एक रोज मैंने यों ही कहा कि देवेन्द्र अब आपको जज साहब कहे, जस्टिस लाम्बा कहे या देवेन्द्र कह कर पुकारे तो वे हस कर बोले मै ता आपका अजीत हूं इसलिए आपके मुंह से देवेन्द्र की अच्छा लगता है । मै समझता हूं यह उनके बड़प्पन की नि ाानी थी। मैम्बरान हाईकोर्ट से भी मुझे मिलने काइतफाक हुआ। बहुत थोड़े अर्से वे हाईकोर्ट के जज रहे लेकिन इस थोड़ा अर्सा में भी मझे मालूम हुआ कि एक अच्छे जज की छाप उन्होने छोड़ी है। उनके चेहरे पर हर वक्त मुस्कराहट होती थी। वैसे भी वे बड़े नर्म तबीयत थे हालाकि हमारे इलाके की तर्जे–गुफ्तगू कुछ रफ सी हैं। उनके पास से कोई कुछ रफ सी है। उनके पास से कोई निरा ा होकर नहीं लौटता था। उनका हमारे दरम्यान से बिछुड़ जाना एक नाकाबले तलाकी नुकसान है । परमात्मा उनकी आत्मा को भाांत और उनके परिवार को इस सदमें को बर्दा त करने की भाकित दे यही मेरी उनसे प्रार्थना है।

स्पीकर साहब, इनके अलावा मुख्यमंत्री ने जिन 6–7 आदमियो का जिक किया है मै उन्हे श्रद्वांजलि अर्पित करता हूं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता(बेरी): स्पीकर साहब, यह पैदा होने और मरने का सिलसिला तो जारी रहता है लेकिन जो भावना हर नसल के मन में आती है वह यह कि जा पहले नसल चली गई वह उनसे बेहतर थी और वे उनकी जगह नही ले सकेगे। इसी किस्म की भावना आज जब हम मरहूम नेताओ को

श्रद्वाजलि पे ा कर रहे हैं मै भी महसूस करूगा और यह हाउस भी करेगा।

श्री फखरूदीन अहमद प्रैजिडैन्ट के तौर पर जितने कामयाब थे उतने ही एक वकील के तौर पर भी कामयाब थे। बतौर सियासतदान भी बड़े कामयाब रहे। ने ानल मूवमैंट में उनकी कुर्बानी यह थी कि उस जमाने में भी काग्रेस के साथ रहते थे। उनका नाम याद आते ही डेढ सौ दो सौ साल पुराना इतिहास हमारी आंखो के सामने आ जाता है। गुजरांवाला में इनके दादा पैदा हुए, दिल्ली में इनके बाप पैदा हुए। रि ते के लिहाज से ये हमारी बिरादरी से कुनैक्ट हो गये और मिर्जा गालिब से भी कुनैक्ट हो गए। वे तमाम गुण जो एक अच्छे इन्सान में होते है, जो एक कल्चर्डइन्सान में होते है वे सारे इनके करैक्टर के पार्ट थे ।

श्री अली यावर जंग बहादुर, मै पहले समझता था कि हैदराबाद के है क्योंकि उन्होने अपनी सारी जिन्दगी हैदराबाद में काटी थी लेकिन पिछले दिनो जब मै हस्पताल मे था तो पता लगा कि वे लखनऊ में पैदा हुए थे। अपनी जिदंगी का काफी अर्सा उन्होने वहां काटा। इनकी अपनी लाइब्रेरी भी वहां क्योंकि ये एक बड़े लिटरेरी टेस्ट के आदमी थे। मौलाना आजाद भी इनके मेहमान हुआ करते थे। वे उर्दू तथा परसियन के बेहतरीन लिटरेरी आदमी थे। पालिटिकल साइड पर वे पहले ने ानलिस्ट लीडर नहीं थे बल्कि लिटरेरी तौर पर उनका बड़ा भारी कन्ट्रीब्यू ान था।

श्री अजीत प्रसाद जी जैन बड़े प्रोग्रैसिव फार्मर थे। आजकल तो बहुत लोग प्रोग्रैसिव फार्मर है लेकिन उस समय इतने नहीं थे। एक दिन सैकिण्ड लोक सभा में मै गलती से यह कह बैठा कि खुराक और जरायत का महकमा एक ऐसे व्यक्ति को दे दिया जिसको खेती–बाड़ी के बारे में इतना ज्ञान नहीं है। थोड़े दिनो के बाद मुझे चिट्ठी आई कि आप मेरे फार्म पर आये, मै वहां गया, उनके फार्म को देख कर मै हैरान हो गया कि उस जमाने में वे लीडिग फार्मरो में सै है।

स्पीकर साहब श्री देवेन्द्र लाम्बा साहब के बारे में तो केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि जो इस लिस्ट मे आठ मरहूमो का नाम है उन आठ में हमारी नसल के बाद की नसल के ये पहले व्यक्ति है जो इस संसार से चल बसे है। मै तो उनके बारे मैं इतना ही कहूंगा कि अभी फूल खिला भी नहीं था, पहले ही मुरझा गया। उनक चले जाने से मुझे महान दुख है।

कामरेड गोपालन सातवी जमात से पालिटिक्स से संबंध रखते थे। जब वे सातवी जमात में पढ़ते थे तो उन्होने कांग्रेस सै ान में वांलटियर के रूप में काम करना भुरू कर दिया था। वे केरल कांग्रेस के प्रैजीडेन्ट बने। उस जमाने में वे इन्कलाब पार्टी में थे उनके खून और दिमांग में केवल इन्कलाब छाया हुआ था।वे कांग्रेस में रहते हुए भी इन्कलाबी थे। जब सो ालिस्ट पार्टी बनी तो इन्होने इस को आग्रेनाइज किया था फिर बाद में वे कम्यूनिस्ट पार्टी में भाामिल हो गये । जब कम्यूनिस्ट पार्टी में भी दो धड़े बन

गये एक नर्म दल और दूसरा गर्म दल तो वे गर्म दल मे चले गये। वे सारी उम्र पार्लियामेंट के मैम्बर रहे।

सन् 1958 मे जब वे बीमार थे तो रोहतक में वे मेरे कमान पर ठहरे हुए थे। सरदार प्रताप सिंह कैरो ने उनको गिरफतार करने के लिए पुलिस को भेजा ता वे उनके साथ पैदल ही हो लिए, उन्होने मोट कार के लिए किसी किस्म की पे ाके ा नही की। उनके पास अपनी भी मोटर कार थी लेकिन वे पैदल ही उनके साथ चल पड़े। जब पुलिस वालो ने देखा कि वे बहुत कमजोर है और चल नही सकते तो उनको गाड़ी देनी पड़ी। उनके द र्न मेरे धर पर ता तब हुए थे ओर पिछले दिनो राव निहाल सिंह जी के साथ मुझे त्रिवेन्द्रम जाने का मौका मिला था तब भी उनके द र्न करने का अवसर प्राप्त हुआ था।

श्री ढबेर से लोगो को एक बात जरूर सीखनी चाहिए कि वे ऐसे चीफ मिनिस्टर थे जैसे मौलवी साहब हुए हैं। वे अपनी गली के उसी धर में रहते हुए भी चीफ मिनिस्टरी को चलाते रहे। उन्होने सरकारी बंगला नहीं लिया। चीफ मिनिस्टर होते हुए भी उन्होने कभी गार्ड को नहीं रखा। वे चीफ मिनिस्टर होते हुए भी सादगी से और ईमानदारी से रहे।

इन भाब्दो के साथ, स्पीकर साहब मै उन तमाम महापुरूशो को जिनके बारे में लीडर आफ दी हाउस ने भाोक प्रस्ताव रखा है, अपनी खराजे अकीदत पे ा करता हूं।

श्री मति लेखवती जैन(अम्बाला भाहर): स्पीकर साहब, हमारे चीफ मिनिस्टर साहब ने जो भाोक प्रस्ताव रखा है, मै उसके साथ अपने आप को संबंधित करती हूं। हमारे दे ा के कई एक महान हमारे बीच से चले गये, उनके चले जाने से मुझे और हमारे सारे दे ा को बहुत दु:ख है। जिस समय राश्ट्रपति श्री फखरूदीन अली अहमद की मृत्यु का दु:खद समाचार आया तो यह हमारे दे ा के लिए एक बहुत ही दुखदायी समाचार था। हमारे चीफ मिनिस्टर साहब ने उनके बारे बहुत कुछ कह दिया है, इससे ज्यादा मै कुछ नहीं कहना चाहती।

स्पीकर साहब, श्री ढबेर भाई जो हमारे कांग्रेस के प्रेजीडेन्ट रहे। उनसे मेरी परसनल वाकफियत थी। वे कांग्रेस प्रेजीडेन्ट होत हुए भी कोई भी सर्वोदय संबंधी मीटीग बिना अटेन्ड किये नहीं रहते थे। इतना कम समय होते हुए भी वे दे ा की भलाई के कामो में अव य समय देते थे।

श्री अजीत प्रसाद जी जैन के साथ भी मुझे अजादी की मूवमैंट में काम करने का अवसर मिला। दे ा को आजाद कराने में उन्होने बहुत ही ज्यादा काम किया था, उनके चले जाने से मुझे बहुत ज्यादा रंज है। सबसे ज्यादा रंज और अफसोस तो बहिन लज्जा रानी जी का है जो इस सदन की एम.एल.ए. थी । हम इस सदन की थोड़ी ही मेम्बर है और उन बहिनो में से एक और चली गई, जिनके चले जाने का मुझे महान दु:ख है।

जहां तक लाम्बा साहब का संबंध है, उनके चले जाने से हमारे दे ा को और जनता को बड़ा दुख है। इतनी यंग उम्र में उनकी मृत्यु हुई है, जिससे दे ा को बड़ा भारी नुक्सान हुआ है।

इन चन्द भाब्दो के साथ, इन महान नेताओ के प्रति जो हमारे बीच से चले गये है, उनके चरणो में श्रद्वा के फूल अर्पित करती हूं।

Mr. Speaker: Hon Members, I fully associate myself with the Leader of the House and other hon. members about the sentiments expreesed by them in respect of our late President and various other dignitaries who have left us during the period since was last met.

Sh. Fakhruddin Ali Ahmed was first elected to the Assam State Assembly in 1935 and joined the State Cabinet. He was elected to the Rajya sabha in 1954 and remained its members til 1957. From 1957 to 1966 he remained a Minister in Assam Cabinet. He was again elected to the Rajya Sabha in April, 1966 and joined the Union Cabinet as a Minister for Irrigation and Power. He held various portfolios up to July, 1974, when he was elected to the august Office of the president of India.This Office he held till recently when he died in harness.Sh. Ahmed's death is a great loss to the nation as it has been deprived of his wisdom, compassion and decency. Sh. Ahmed was a true nationalist, a stead fast freedom fighter, an administrator of varied experiences and an outstanding example of our composite Culture. He was a

symbol of secularism and national unity and his death has created a void which will be hard to fill.

Sh. Ali Yavur Yung Bhadur, Governor of Maharastra, held many important posts in the erstwhile Hyderabad State but resigned in 1947. And become Vice-cancellor of the Osmania University. Before his appointmenta Governor of Maharastra, he held diplomastic assignments in various countries and also worked as Vice-Chancellor of the Aligarh Muslim University. He was a great diplomastic and an administrator.

Sh. U.N. Dhebar, former congress Prsident, was a Veteran freedom fighter who took part in various movements for national liberalisation. Sh. Dhebar was Chief Minister of Saurashtra State from 1948 to 1954. He also presided over the annual session of the A.I.C.C. held at Amitsar in 1956. In 1962, he was elected a member of the L:ok sabha but resigned the following year on his appointment as Chairman of Khadi Commssion. He was known for his simplicity and honesty.

Sh. Ajit Parshad Jain was elected to the U.P Assembly and appointment a Minister in 1937. He was also a member of the Constituent Assembly. In 1950 he joined the Union Cabinet. He worked as Governor of Kerala in 1965-66. He was an eminent leader and able administrator.

Mr. Justrice, D.S. Lamba belonged to village Alakpura, He statred his legal practice at Hissar.In 1974 he was elected chairman of the Bar Council of the Punjab and Haryana High Court. He was served as deputy advocate General/Senoir Deputy Advocate General from October 1970 to

March, 1976, when he was appointed as Additional Judge of the Punjab and Haryana High Court. In his death I have lost a s personal friend.

Smt. Lajja rani was a member of Our House. She was the wife of late Major Amir Singhs, M.L.A., she took keen interest in the uplift of the Weaker sections of the Society and backward Areas.

Sh. R.M. Hajarnavis, former Unoion Minister of State died on the 28th December, 1976. He remained a membetr of Lok Sabha from 1957 to December, 1970. He was inducted in the Central Cabinet in 1958.

Sh. A.K. Gopalan died only yesterday. Sh. Gopalan was a Member of Indian National Congress and a member of the A.I.C.C. for several years. He actively worked in Trade Union and Kisan movement in Kerala. He also took part in the movement for a resonsible government in that State. He was a member of the Lok Sabha from 1952 till Januray, 1977. He was a great marixist leader.

I shall ceratinely convey the sympathies of the House to the bereaved families.

Now, I request you all to stand in silence for two minutes as a mark of the respect to the memory of the departed leaders.

(The House then stood in in silence for two minutes as a mark of the respect to the memory of the departed leaders)

Mr. Speaker: The House stands adjourned till 9.30 a.m. tomarrow.

16.13 बजे

The sabha then adjourned till 9.30 A.M. on Thursday, the 24th March, 1977.